उपसंहार

उपसंहार

स्वातंत्र्योत्तर काल के आंचलिक कथाकारों में राजेंद्र अवस्थी का नाम अग्रणी रहा है। साहित्यिक गुणवत्ता के कारण हिंदी साहित्य जगत में उनका मौलिक योगदान रहा है। अल्पावधी में ही हिंदी साहित्य में उन्होंने अपनी अलग पहचान बना ली है, जिसके कारण आज राजेंद्र अवस्थी एक जाने-माने एवं बहुचर्चित लेखक के रूप में उभरकर आए हैं।

राजेंद्र अवस्थी हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने कथाकार, उपन्यासकार तथा संपादक की हैसियत से हिंदी साहित्य को बहुत बड़ा योगदान दिया है। आपका जन्म जबलपुर में हुआ। आपका बचपन मंड़ला और बस्तर क्षेत्र की गोंड जाति के बीच व्यतित हुआ। पिताजी अध्यापक होने के कारण उन्हें कई स्थानों पर काम करना पड़ा इसी वजह से आपकी पढ़ाई देहातों में हुई। आप जबलपुर से बी.ए. पास करके नागपुर में नौकरी के लिए आए कुछ साल नागपुर में व्यतित करने के पश्चात आप मुम्बई जैसे महानगर में आये। मुम्बई में फिल्मीस्तान ऑफिस खोला लेकिन फिल्मी दुनिया की बनावटी चाल-ढाल देखकर बिना फिल्म बनाये दिल्ली चले गये। दिल्ली में अवस्थी जी ने 'कादम्बिनी' पत्रिका का मुख्य संपादक के नाते कार्यभार संभाला। स्पष्ट है कि राजेंद्र अवस्थी के जीवन में हमें अनेक चढ़ाव उतार देखने को मिलते हैं ज्यों उनके व्यक्तित्व को निखारते हैं।

आपकी प्रथम कहानी 'गुंडा' है। आपका प्रथम कहानी संग्रह 'मकड़ी के जाले' नाम से प्रकाशित हुआ है। आप बचपन से ही कहानियाँ लिखते रहे। आपकी साहित्य साधना **1956** से प्रारंभ हुई। अत: आप हिंदी साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर काल के एक सफल कहानीकार तथा कथाकार के रूप में उभरकर सामने आते हैं। आपकी कहानियों में आदिम तथा महानगरीय जीवन का सशक्त चित्रण दिखाई देता हैं। उसमें

महानगरीय जीवन से बढ़कर आदिम जीवन की समस्याओं का वास्तविक चित्रण अनुभव और संवेदना के साथ प्रस्तुत हुआ है। हिंदी के अन्य कहानीकारों ने आंचलिक कहानियाँ लिखी है, लेकिन अवस्थी जी ने अपनी कहानियों में आदिम जनजीवन का चित्रण जिस आत्मीयता और लगन से किया है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। अवस्थी जी का पूरा कथासाहित्य देखने के बाद लगता है कि उन्होंने प्रेमचंद जी की विचारधारा को आगे बढ़ाने का स्तुत्य काम किया है।

आदिम जीवन के विविध पहलुओं को अवस्थी जी ने गहराई से एवं मार्मिकता से उदघाटित किया हैं। उनके द्वारा आदिम जीवन के संदर्भ में उठाए हर एक पहलू में यथार्थता के दर्शन होते है। आदिमों के पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थितियों का अंकन लेखक ने यथार्थता के धरातल पर सूक्ष्मता से किया है। अवस्थी जी ने आदिमों की सामाजिक स्थिति का चित्रण अपनी कहानियों में उजागर किया है, आदिम लोग अज्ञान, अंधश्रद्धा एवं अशिक्षा के कारण रूढ़ि-परंपरा में विश्वास रखते हैं। अत: वे जाँति-पाँति तथा अंतर्जातीय विवाह को मान्यता नहीं देते, इसका चित्रण 'चाँद के पीछे चाँदनी के नीचे', 'जड़बंधन' तथा 'विभाजन' कहानी में दिखाई देता है। आदिम लोग आज भी अनपढ़ एवं अज्ञानी होने के कारण इन रूढ़ि-परंपराओं से चिपके हुए हैं। इनकी इस प्रवृत्ति को यथार्थता के धरातल पर अवस्थी जी ने अपनी कहानियों में उजागर किया है। सामाजिक, आर्थिक स्तर पर नारी पर होनेवाले अन्याय अत्याचार एवं पीड़ा का अंकन लेखक ने यथार्थता के धरातल पर सूक्ष्मता से किया है। सामाजिक स्तर पर नारी जीवन में हिंसा के रूप में होनेवाले यौन अत्याचार का चित्रण अवस्थी जी ने 'सिरदार', 'जलता सूरज', 'कमर में बन्द एक गाँठ' आदि कहानियों के माध्यम से उद्धाटित किया है। अत: आदिम नारी जीवन के अनेकविध पहलुओं का चित्रण यथार्थता के साथ गहराई से अंकित हुआ है।

आदिमों में रीति-रिवाजों को निभाने की प्रथा परंपरा से चली आयी हैं। आदिमों में लमसेना रखना, दूध लौटना, भूल-विवाह करना, गुदना-गुदवाना, तम्बाकू

बाँटना आदि प्रथा-परंपराएँ रही हैं। आदिमों में 'लमसेना' रखने की प्रथा बहुत प्रचलित है। आदिम लोग 'लमसेना' रखने की प्रथा पर बहुत जोर देतें हैं। आदिमों में लड़की के पिता को दहेज दिया जाता है। यदि लड़के के पास दहेज देने के लिए पैसे न हों तो उसे लड़की के पिता के घर रहकर काम करना पड़ता हैं। इस प्रथा को आदिम लोग, 'लमसेना' कहते हैं। इस प्रथा का अंकन अवस्थी की 'लमसेना' में दिखाई देता हैं। आदिमों में 'भूल विवाह' करने की प्रथा रही है, इस प्रथा के अनुसार यदि कोई कुमारी गर्भवती हो तो उसका विवाह गर्भ जिसका है, उसके अलावा किसी दूसरे के साथ कर दिया जाता है, इसका चित्रण राजेंद्रजी की 'जलता सूरज' कहानी में चित्रित हुआ है। आदिमों में 'गुदना-गुदवाने' की प्रथा विशेष प्रिय लगती है जिन्हें वे अपना कर्तव्य समझकर निभाते चले आ रहे है इस प्रथा का अंकन अवस्थी जी ने 'विभाजन' कहानी के माध्यम से किया है। गुदना-गुदवाने के पीछे उनकी धारणा रहती है कि जिस युवती के शरीर पर गुदने के जितने ज्यादा निशान होंगे उससे ज्यादा उसका पति उससे प्यार करता होगा और उतना ही उसका पारिवरिक जीवन सुखी संपन्न होगा।

आदिम लोग घाँस और फूस से बनायी झोपड़ियों में निवास करते है। इसी प्रकार की एक झोपडी गाँव के बाहर रहती है, उसे 'घोटुल' कहा जाता है। यह 'घोटुल' उनकी सांस्कृतिक विरासत हैं। आदिमों की प्रथा-परंपराओं के अनुसार लड़का या लड़की दस-बारह वर्ष की उमर में ही घोटुल जाते हैं। घोटुल के प्रमुख को सिरदार या मुखिया कहा जाता है। सिरदार तथा अन्य सदस्य घोटुल की जिम्मेदारियाँ संभालते हैं। शाम होते ही सारे लड़के लडकियाँ सजधजकर घोटुल में चली आती है। घोटुल में रातभर किस्सा-कहानियाँ तथा नाच गाना चलता रहता है। घोटुल में इन कुमार कुमारियों को जीवन संबंधी उचित शिक्षा का ज्ञान दिया जाता है। यदि लड़की कोई युवक पसंद करती है, उससे शादी करना चाहती है तो वह घोटुल के सारे सदस्यों को तम्बाकू बाँटती है, जिसे वह तम्बाकू नहीं देती वह उसका जीवन साथी चुना जाता है। शादी के बाद उन्हें घोटुल से सम्मानपूर्वक विदाई दी जाती है। इसका चित्रण अवस्थी जी ने 'सिरदार',

'विभाजन', 'तीर का तिनका' आदि कहानियों में किया है इन कहानियों में गढ़बंगाल तथा बस्तर के 'घोटुल' का अंकन सशक्त रूप में किया है।

अवस्थी जी ने अपनी कहानियों में आदिम पात्रों को चित्रित किया है, उन्होंने विवेच्य कहानियों में मध्यप्रदेश के बस्तर तथा मंडला क्षेत्र के आदिमों के जनजीवन को उजागर किया है। इस चित्रण के लिए उन्होंने विशिष्ट आदिम पात्रों को लिया है। उनके ये आदिम पात्र अपने समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं। आदिम जीवन की सारी विशेषताएँ उनमें मौजूद हैं। अवस्थी जी ने जिन आदिम पात्रों का चित्रण विवेच्य काहानियों में किया है, वे किसी भी कीमत पर अपनी रूढ़ि-परंपराएँ, रीति-रिवाज छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। इसका अंकन अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में पात्रों के द्वारा किया है।अवस्थी जी का धारणा है कि ये आदिम लोग अपनी प्रथा-परंपराओ इतने जुड़े हुए दिखाई देते है कि इसके कवच को छेदकर वे बाहर निकलना नहीं चाहते हैं। ये प्रथा-परंपराएँ उनके लिए एक सुरक्षा कवच लगता है।

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में आदिमों की समस्याओं का अंकन किया है। आदिमों की अनेक समस्याएँ विवेच्य कहानी संग्रह के माध्यम से उजागर करने का एक सफल प्रयास अवस्थी जी ने किया है। आदिमों में स्थित अंधविश्वास की समस्या, जातीय भेदाभेद की समस्या, नारी शोषण की समस्या, रीति-रिवाजों की समस्या, शिक्षा की समस्या, नशापान की समस्या आदि समस्याओं का अंकन करके अवस्थी जी ने संकेत किया है किआदिमों की समस्याओं की स्थिति में बदलाव लाने के लिए हमें सरकारी स्तर पर प्रयत्न करने की आवश्यकता है।अन्यथा वे यथास्थिति जीवन व्यतित करेंगे। उनकी स्थिति में बदलाव आना जरूरी है, इसकी ओर अवस्थी जी ने ध्यान खिंचा है।

ये समस्याएँ आदिमों के जनजीवन को दुर्बल बना रही हैं, इन समस्याओं का समाधान अवस्थी जी ढूँढना चाहते हैं। वास्तव में समस्याएँ मानव जीवन को गतिमान बनाती है। परंतु आदिम लोग इन समस्याओं की कचोट में फसकर स्थितिशील बने हुए दिखाई देते हैं। अवस्थी जी की धारणा है कि दूर-दराज पहाड़ो में बसे समस्याओं के

गर्तों में धंसते जा रहें इन आदिमों के विकास के लिए सरकार द्वारा भरकस प्रयत्न होने की आवश्यकता है।हमारी सरकार इसी दिशा में जरूर कदम उठा रही है परंतु आदिमों के अंधविश्वास, पहाड़ी प्रदेशों में बसे हुए बिचौलियाँ आदि के कारण उनके विकास की गति क्षीण नजर आ रही है। विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियाँ इस तथ्य पर पूरा प्रकाश डालती है।

'बस्तर' का पूरा अँचल इन पात्रों का प्रतिनिधित्व करके अपने माध्यम से परिवेश जन्य पीडिओं को वाणी देने का काम कर रहा है।

अवस्थी जी की विवेच्य कहानियों में पर्याप्त वैविध्य मिलता है। उनकी कहानियों की भाषा में भी विविधता देखने को मिलती है। अवस्थी जी की कहानियों में चित्रात्मक भाषा, आलंकारिक भाषा, प्रभावात्मक भाषा आदि के रूप में भाषा देखने को मिलती है। उन्होंने विवेच्य कहानियों में सरल एवं स्वाभाविक शब्दों का प्रयोग किया है। उनकी कहानियाँ आदिम जनजीवन से जुड़ी हैं। अत: उनकी कहानियों के कथानक भी उसी भूमि से जुड़े हुए हैं। उनकी आदिम जीवन पर लिखी गई विवेच्य कहानियों में कथावस्तु का महत्वपूर्ण स्थान है, उनकी कहानियों की कथावस्तु में आदिमों का जनजीवन और उनकी पीड़ाएँ चित्रित हैं। उन्होंने विवेच्य कहानियों में पात्रों का चित्रण स्वाभाविकता और मानवीय तत्त्वों के धरातल पर किया है। उनकी विवेच्य कथासंग्रह की सभी कहानियों के चरित्र विशुद्ध रूप से हमारे जीवन के सच्चे प्रतिनिधि हैं। उन्होंने विवेच्य कहानियों में पात्रों का चित्रण अनेक रूपों में किया है। अवस्थी जी की कहानियों के पात्र विभिन्न विशेषताओं से युक्त हैं। जिनमें कथात्मक अनुकूलता, मौलिकता, स्वाभाविकता, यथार्थता, सहृदयता आदि विशेषाएँ हैं। उनकी कहानियों के पात्र समाज के अलग-अलग वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अवस्थी जी की कहानियों में संवाद कथावस्तु का विकास करना, पात्रों की चारित्रिक व्याख्या करना,वातावरण एवं देशकाल का बोध कराना आदि उद्देश्यों की

पूर्ति हैं। उनकी कहानियों के संवादों में पात्रानुकूलता, संक्षिप्तता, मार्मिकता,उपयुक्तता आदि गुण देखने को मिलते हैं। कहानियों के संवाद भावात्मक सांकेतिक एवं नाटकीय हैं।

अवस्थी जी के विवेच्य कहानीसंग्रह की कहानियों में देशकाल वातावरण के रूप में बस्तर, मंडला, गढबंगाल, विंध्याचल, आदि स्थानों का चित्रण हुआ है। देशकाल एवं वातावरण में संक्षिप्तता, वास्तविकता, प्रभावकरिता आदि गुण मिलते हैं। उन्होंने विवेच्य कहानियों में आदिमों के जनजीवन की सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थिति का अंकन किया है।

अवस्थी जी की विवेच्य कहानियाँ सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट करना, आदिमों के जनजीवन का यथार्थ चित्रण करना, आदिमों की समस्याओं को उद्घाटित करना आदि उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं।

अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में विविध शैलियों का प्रयोग किया है। उन्होंने विवेच्य कहानियों में वर्णनात्मक शैली, संवादात्मक शैली, चित्रात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली तथा आत्मकथात्मक शैली का अंकन किया है। स्पष्ट है कि अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों के सृजन के लिए शैलियों का यथोचित प्रयोग किया है।

राजेंद्र अवस्थी जी की काहानियों के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि आदिम जीवन की विसंगतियों तथा समस्याओं को लेखकने अपने अनुभव और सामान्य पात्रों के जरिए उजागर किया है। पात्रों की रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार, रीति-रिवाज आदि का यथार्थ अंकन अवस्थी जी ने सहजता से किया है। आप ने आदिमों के जीवन को नजदीकी से देखा और परखा है। अत: आदिम जनजीवन की समस्याएँ और उनका आदिम जनजीचन पर पड़नेवाले असर का चित्रण अपने अनुभव से गहराई में पैठकर किया है। परिणात: आप की कहानियों में चित्रित आदिम जनजीवन का स्वरूप मूल रूप में पाठकों के सामने उभारकर आता है। अवस्थी जी आदिम जनजीवन के चितेरे माने जा सकते हैं।

स्पष्ट है कि अवस्थी जी के विवेच्य कहानी संग्रह की कहानियों में आदिम जीवन के अनेकविध पहलुओं का चित्रण यथार्थता के साथ गहराई से रेखांकित हुआ है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की उपलब्धियाँ :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के अध्ययन के पश्चात निम्नलिखित उपलिब्धियाँ प्राप्त हुई है...

1 राजेंद्र अवस्थी के व्यक्तित्व का उनकी कहानियों पर प्रभाव दिखाई देता है।

2 राजेंद्र अवस्थी का व्यक्तित्व उर्ध्वगामी एवं संघर्षशील रहा है।

3 अवस्थी जी की बचपन से साहित्य के प्रति रूची होने के कारण उनके साहित्य में अनुभूती विश्व विस्तार से उभर उठा है।

4 राजेंद्र जी ने जो जो देखा और अनुभव किया उसे संवेदना के पटल पर सुस्थिर बनाकर साहित्य सृजन किया है।

5 बस्तर, मंडला क्षेत्र से बचपन से जुड़ने के कारण अवस्थी जी की संवेदनाएँ वहाँ के जनजीवन से जुड़ी हुई है।

6 अवस्थी जी ने विवेच्य कहानियों में आदिम जीवन के विविध पहलुओं का गहराई के साथ एवं सूक्ष्मतम दृष्टो से विवेचन किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ :

1 'राजेंद्र अवस्थी के कहानियों का शिल्पगत विवेचन'

2 'राजेंद्र अवस्थी की कहानियों में वर्णित सामाजिक यथार्थ'

वस्तुत: हर शोध-विषय की अपनी सीमा होती है। मेरा शोध-कार्य भी अपनी सीमा में रहकर संपन्न हुआ है। आनेवाले समय में उपर्युक्त विषयोंपर स्वतंत्र रूप से शोध-कार्य हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ ग्रंथ सूची :

आधार ग्रंथ :

1 राजेंद्र अवस्थी महुआ आम के जंगल, राजेश प्रकाशन, दिल्ली प्र.सं. 1987

सहायक ग्रंथ :

1. अवस्थी राजेंद्र - मेरी प्रिय कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली दू.सं.-1978

2. अवस्थी राजेंद्र - जंगल के फूल, राजपाल ॲन्ड सन्स, दिल्ली,प्र.सं.1960

3. अर्थानी सम्पति - मगधी भाषा और साहित्य, राष्ट्रभाषा परिषद, बिहार प्र.सं.-1976

4. कोंडेकर ए. वाय. - भारतीय आदिवासी समाज, फडके प्रकाशन, कोल्हापुर, प्र.स. 1987

5. गारे गोविंद - महाराष्ट्रातील आदिवासी जमाती, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे स.2000

6. गुप्ता चमनलाल - यशपाल के उपन्यास सामाजिक लक्ष्य, शारदा प्रकाशन, प्र.सं.-1978

7. जतकर पुष्पा - रचनाकार रेणू, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स. 1992

8. झा सीताराम 'श्याम' - भारतीय समाज का स्वरूप, बिहार ग्रंथ अकादमी, पटना, प्र.स. 1974

9. टंडन प्रतापनारायण - हिंदी कहानी कला, हिंदी सूचना समिति, विभाग लखनऊ,प्र.सं.1970

10. त्रिगुणायत गोविन्द - शास्त्री समीक्षा के सिद्धान्त,

11. ठाकूर देवेश - मैला आंचल की रचना प्रक्रिया, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1987

12. धुमाळ यादवराव - साठोत्तरी हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक तुलनात्मक अध्ययन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर प्र.स. 1997

13. धुमाळ क्षितिज - बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी उपन्यासों का प्रवृत्तिमूलक अनुशीलन, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.2006

14. दास शिवतोष - भारत की जनजातियाँ, किताबघर गांधीनगर दिल्ली अगस्त 1983

15. द्विवेदी विरेन्द्रनाथ - आधुनिक हिंदी कविता में लोकतत्व, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्र.सं.-1991

16. नायडू पी.आर. - भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, द्वितीय सं. 2002

17. नाडगौंडे गुरूनाथ - भारतीय आदिवासी, कॉन्टिनेंटल प्रकाशन, पुणे

18. नागर विमल शंकर - हिंदी के आंचलिक उपन्यास सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ, प्रेरणा प्रकाशन, मुरादाबाद, सं.2000

19. नागर विमल शंकर - अनुसंधान के नये सोपान, प्रेरणा प्रकाशन, मुराबाद प्र.सं.1994

20. नीरव सुरेश - राजेंद्र अवस्थी - इक्कीसवीं सदी की दृष्टि, प्रमोद प्रकाशन, दिल्ली, प्र.स.- 1982

21. परदेशी भाऊसाहेब - राजेंद्र अवस्थी का कथा साहित्य, साहित्य निलय, कानपुर, प्र.स.- 2000

22. प्रकाश कलावती - हिंदी के आंचलिक उपन्यासों का लोकतात्त्विक अध्ययन, ज्ञानपुर्णा प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं.1990

23. भुतड़ा घनश्याम - समकालीन कहानियों में नारी के विविध रूप, अतुल प्रकाशन, कानपूर प्र.स. 1993

24. भट्ट सुर्यनारायण - धर्म और समाज, सरस्वती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.स. 1992

25. मेहता मंगल - हिंदी कहानी वस्तु विकास एवं शिल्प विधान, प्रगति प्रकाशन, आगरा, प्र.सं.1984

26. मिश्र रामदरश - हिंदी उपन्यास के सौ वर्षे, गीरनार प्रकाशन, पीलनीगंग, प्र.सं.1984

27. राय कैलाशकुमार - वन्य समाज में अपराध और प्रथा,मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल, संस्करण 1971

28. लाल लक्ष्मीनारायण - हिंदी कहानियों का शिल्प विधान, साहित्य भवन प्रा. लि., इलाहाबाद, प्र.सं.1967

29. शर्मा रामनाथ - भारत में ग्रामीण समाजशास्त्र, राजहंस प्रकाशन,मेरठ, प्र.सं.1977

30. शशि श्यामसिंह - भारत की आदिवासी महिलाएँ, समकालीन प्रकाशन, दिल्ली

31. शशि श्यामसिंह - हिमालय के खानाबदेश, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली प्र.सं.-1978

32. संगवे (संपा.) विलास - भारतातील सामाजिक समस्या, पॉप्युलर प्रकाशन, मुंबई, प्र.सं.1987

33. स्वर्णलता - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास की समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर प्र.सं.-1975

34. सिन्हा विरेन्द्र - शब्दार्थो के गवाक्ष, विवेक पब्लिशिंग हाऊस, जयपुर प्र.सं.-1986

35. व्होरा आशाराणी - भारतीय नारी दशा और दिशा, नॅशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली प्र.सं.-1983

शब्द कोश :

1. संपा. नवलजी - नालंदा विशाल शब्द सागर, संस्करण 1988

2. संपा. वर्मा रामचंद्र - प्रमाणिक हिंदी कोश,हिंदी साहित्य कुटिर सं.सं.2000

पत्रिका

1. संपा डॉ भगतसिंह अक्तूबर-दिसंबर 1987

891.433
JAM
T15515